त्रिवेणी के तीन रत्न

डॉ. सपना कुमारी

'त्रिवेणी' में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के तीन समालोचनात्मक प्रबंधों–जायसी ग्रंथावली की भूमिका, भ्रमरगीतसार की भूमिका, तुलसी ग्रंथावली की भूमिका के विशिष्ट अंशों का संकलन है। 'त्रिवेणी' के संग्राहक श्री कृष्णानंद जी (प्रधानाचार्य, दयानंद महाविद्यालय, वाराणसी) हैं। एक समालोचक के लिए यह आवश्यक होता है कि वह सहृदय तथा रसिक हो, क्योंकि समालोचक के भावों की विवेचना ही समालोचना होती है। जायसी निर्गुणधारा की प्रेममार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि, तुलसी सगुणधारा की रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि और सूर सगुण धारा की कृष्ण–भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। जायसी, सूर एवं तुलसी के संबंध में शुक्लजी के हृदय का और साहित्य के यथार्थ निर्णय का एक संयोग हुआ है।